जीवन मूल्यः स्वरूपं एवं महत्त्व

डा0 रजनी बिष्ट
स्वामी विवेकानन्द कालेज ऑफ ऐजूकेशन
रूडकी

मूल्य शब्द का तात्पर्य मूलतः जीवन मूल्य अर्थात जीवन के मानदण्ड़ों से ही होता हैं मूल्य मानव समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के परिचालक तत्व हैं। किसी भी समाज की उन्नति मानवीय मूल्यों पर ही आधारित होती है मूल्य समाज में मानवीय व्यवहार के मानक स्वीकार किए गए है यथा मानवीय जीवन को किन्ही महत् उद्देश्यों से जोड़ने की प्रेरणा से ही मूल्यों का उदय हुआ है। व्यक्ति एवं समाज की हित कामना ही मूल्य निर्माण का प्रमुख तत्व है। सभी मूल्य अन्ततः मानव कल्याण की भावना से जुडे होते हैं और व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ मानव समाज में प्रतिष्ठा भी चाहते हैं। अतः मूल्य व्यक्तित्व विकास और सामाजिक प्रतिष्ठा के सोपान भी हैं। प्रो0 मैकेन्जी के अनुसार ''मूल्य या जीवन मूल्य से हमारा आशय उस विचार से है, जो एक विचारशील प्राणी के चिन्तन का परिणाम है।[1]'' मूल्य मानव पर ऊपर से ही आरोपित नहीं किये जाते बल्कि ये मानव की अनुभूतियों का सत्य होते हैं। जो आत्मोपलब्धि की प्रक्रिया को कार्यान्वित कर अपनी सुन्दरता उदात्तता और महत्ता के कारण समाज द्वारा जीवन मूल्य के रूप में स्वीकार किए जाते हैं।

भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही विचारधाराओं के अन्तर्गत मूल्य–मीमांसा एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। मूल्य–मीमांसा का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है जो अब एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में विकसित हो रहा है। ''मूल्य मीमांसा अंग्रेजी शब्द 'एक्जिओलोजी' (Axiology) का हिन्दी रूपान्तर है। 'एक्जिओलोजी' शब्द यूनानी शब्द 'एक्सियस' और 'लागस' का तर्क सिद्धान्त या मीमांसा हैं अतः 'एक्जियोलोजी' या मूल्य मीमांसा का तात्पर्य विज्ञान से है, जिसके अर्न्तगत मूल्य का स्वरूप, प्रकार तथा उसकी तात्विक सत्ता का अध्ययन या विवेचन किया जाता है।''[2] मूल्य मीमांसा विज्ञान में सिद्धान्तों का अलग–अलग विवेचन कर सर्वमान्य अर्थ में मूल्य के स्वरूप तथा प्रकृति को प्रस्तुत किया है।

जीवन मूल्यों का मूल उद्देश्य मानव जीवन को संयमित तथा व्यवस्थित कर सुखद परिणति करना है। जीवन मूल्य के वास्तविक स्वरूप महत्त्व और अन्तिम लक्ष्य के रूप में विश्व के इतिहास में मुख्यतः दो भिन्न धारणाएँ देखने को मिलती है। पहली धारणा कहती है कि विश्व नश्वर है और असत्य भी। असत्य के पीछे भागना बेकार हैं इसलिए कल्पना जगत से बाहर निकलकर परम सत्य की खोज में अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। दूसरी धारणा भोगवाद पर बल देती है। इसके अनुसार प्रत्येक वस्तु के उपभोग में जीवन की सार्थकता निहित है।

भारतीय चिन्तन में इन दोनों ही धारणाओं का अनुपम समन्वय है उनके अनुसार, ''भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में कोई स्थायी विरोधी नहीं है। सांसारिक सम्बन्ध, सुख, ऐश्वर्य सभी क्षणिक एवं नश्वर होते हुए भी वे अनुपेक्षित हैं परम सत्य तक पहुँचने के सोपान तो ये ही तत्व हैं, इन दोनों को मिलाकर ही मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप महत्त्व और लक्ष्य का निरूपण और निर्धारण होता है।''3 मूल्य व्यक्ति के जीवन का आधार होते हैं। व्यक्ति के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं वैयक्तिक जीवन को प्रभावित करते हैं। मूल्यों के अभाव में व्यक्ति जीवन अथवा मानव जीवन की उन्नति, प्रगति एवं विकास कल्पना मात्र ही है। अतः सभी प्रकार के मूल्य जीवन मूल्य हैं। जीवन मूल्य व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर, उसे उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है। वे मानवीय चेतना के विकास के शक्तिशाली प्रेरक तत्व है। जिससे मानव जीवन सुख एवं कल्याण की दिशा में निरन्तर गतिशील रहता हैं जीवनमूल्य व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले वे कारक हैं, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, क्रिया–कलाप अथवा व्यवहार को अपनी अभिव्यक्ति से अत्यधिक प्रभावित करते हैं। इनके आभाव में मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

भारतीय चिन्तन

भारतीय मनीषियो ने इस मिथ्या और क्षणभंगुर जगत को ब्रह्म की अभिव्यक्ति मानकर जीवन के चार पुरूषार्थ अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को मान्यता दी। इनमें मोक्ष तो 'साध्यात्मक' मूल्य तथा धर्म, अर्थ, काम मोक्ष तक पहुँचने के साधन हैं। हमारे धार्मिक ग्रन्थों का मूल उद्देश्य भी जीवन में शाश्वत जीवन मूल्य धर्म, अर्थ, काम–मोक्ष को प्रतिष्ठित करना है। धर्म, अर्थ, काम जीवन की सीढ़ियों हैं जिन पर चढ़कर मनुष्य मोक्ष तक पहुँचने का प्रयास करता है।

भरतीय दर्शन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ऐसे मूल्य हैं, जिनमें सभी मूल्यों का समाहार किया गया है। भारतीय परिवेश मे मानव के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया गया हैं मनुष्य शरीर, बुद्धि मन तथा आत्मा नामक चार तत्वों से मिलकर बना है–

- अर्थ अर्थात सम्पत्ति से शरीर का विकास होता है।
- काम एवं प्रेम से मन का विकास होता है।
- धर्म से बुद्धि का विकास होता है
- मोक्ष से आत्मा का विकास सम्भव है

इन चारों पुरुषार्थों को सभी दर्शन मान्यता देते हैं। इस सम्बन्ध में बाबू गुलाब राय मानते हैं कि ''सारे जीवन मूल्य इन्हीं आदर्शों में समा जाते हैं। धर्म में सामाजिक और नैतिक मूल्य आ जाते हैं, अर्थ का सम्बन्ध भौतिक मूल्यों से है। काम में सौन्दर्य और कला सम्बन्धी मूल्य समाहित हैं, तथा मोक्ष में आध्यात्मिक मूल्य आ जाते हैं।[4] मूल्य मानव पर ऊपर से ही आरोपित नहीं किये जाते बल्कि ये मानव की अनुभूतियों का सत्य होते है।

इस प्रकार मानव जीवन को लक्ष्य मानकर भारतीय चिनतकों ने जिन चार पुरूषार्थों को प्रतिष्ठित किया है, उनमें जीवन के सभी जीवन मूल्यों का सार हैं मनुष्य का आचरण इन्हीं मूल्यों पर आधारित होता है।

पाश्चात्य चिन्तक–

पाश्चात्य चिन्तक वर्तमान को ही सत्य और साक्ष्य मानते हैं। मुख्य रूप से यह भोगवादी दर्शन पर बल देते हैं। इसके साथ ही अरस्तू स्टोइक, एपीक्यूरियम ने उच्चतम आदर्शों का अर्थ ईश्वर से तादात्मय स्थापित करना स्वीकार किया है। काण्ट और हीगेल ने सौन्दर्य कला, आचरण और धर्म को सर्वोपरि मूल्यों के रूप में सुनियोजित किया है। पाश्चात्य चिनतन धारा प्रमुख रूप से वस्तुवादिता पर केन्द्रित हैं अतः इसमें मूल्यों की व्याख्या व्यवहारिक धरातल पर की गयी है। इनके लिए सुख सर्वोच्च मूल्य है। पाश्चात्य चिन्तन में मुख्यतः मूल्य के विषय में तीन विचारधाराएँ मिलती है–

''प्रथम विचारधारा के अन्तर्गत स्पिनोजा, लोट्ज तथा डी0वी0 आदि फलवादी दार्शनिकों को सम्मलित किया जाता है, जिन्होंने मूल्य को व्यक्तिगत मानकर किसी इच्छा की तृप्ति करने वाले आधार को ही मूल्य कहा है। इनके मतानुसार मूल्य की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं होती, उसका निर्माण तो व्यक्ति की अपनी रूचि, अरूचि, मानसिक स्थिति और उसकी आवश्यकताओं के आधार पर होता है। लेयर्ड तथा मूर दूसरी विचारधारा के पोषक हैं, जिन्होंने मूल्य को रूप, रस और गन्ध की भाँति व्यक्ति–सापेक्ष न मानकर विषयगत माना है। जे0एस0टफ्ट्स और एम0सी0ऑटो ने भी मूल्य की इन दोनों विचारधाराओं के मध्य का भाग अपनाकर एक तीसरी विचारधारा की स्थापना करने वाले एक अन्य दार्शनिक एलेक्जेण्डर हैं, जिन्होंने व्यक्ति, जो मूल्य का अनुभव करता है और वस्तु जिसके मूल्य का अनुभव किया जाता है, उन दोनों के सम्बन्ध में मूल्य के अस्तित्व को स्वीकार किया है।''[5] नीत्से के साथ कुछ क्रान्तिकारी जीवन के विकास में सहयोगी अनुभव को मूल्य समझते हैं।

आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिक मूल्य को तीन दृष्टियों में व्याख्यायित करते है ''प्रथम दृष्टि के अर्न्तगत टोयम्बी, मनहेम, इलियट आदि हैं, जो प्राचीन धार्मिक मूल्यों को ही चरम मूल्य स्वीकार करते हैं तथा वैज्ञानिक परिवेश से प्रादुर्भूत उदारवादिता को नकारते हैं। बर्टेड रसल, हक्सले और सार्त्र आदि वैाानिक दृष्टि को अपनाते हुए मनुष्य की वर्तमान हीनता दूर कर उसके प्रबुद्ध तथा विवकेशील स्वरूप को ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य मानने वाली द्वितीय दृष्टि का प्रतिपादन करते हैं। इनके लिए ईश्वर तथा ईश्वर से सम्बन्धित मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं है। भौतिक विकास का विरोध करते हुए मनुष्य की प्रारम्भिक स्थिति और उसके जीवन में व्याप्त विसंगति को ही जीवन मूल्य स्वीकार करते है।[6]

उपरोक्त तीनों दृष्टियों पर पैनी दृष्टि डालते हुए – डॉ0 महावीर दाधीच लिखते हैं – ''पहला वर्ग विज्ञान को अस्वीकार कर धर्म अथवा प्रत्ययवादी दर्शन की प्रतिष्ठा करना चाहता है। दूसरा धर्म को

अस्वीकार कर वैज्ञानिक चेतना से ही मानव–मूल्यों को प्राणवान बनाने का इच्छुक है। मूलतः यह मानवतावादी हैं तीसरा मत एक प्रकार से वस्तुस्थिति को भावात्मक रूप में स्वीकार कर आदिम अथवा प्राकृतिक जीवन का पक्षपाती है।''[7] भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों ही चिन्तकों ने जीवन मूल्यों पर पर्याप्त बल दिया। पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति से भिन्न है। यह भिन्नता इनके विचारों एवं मान्यताओं से परिलक्षित होती है।

''मूल्यों का मूल अनुभव पर आश्रित है। एक मशीन मूल्यों को नहीं जान सकती क्योंकि वह अनुभव करने योग्य नहीं है। मानवीय मूल्य मानवीय अनुभवों की अभिव्यक्ति हैं तथा अनुभव हमारे संतुष्ट–असंतुष्ट होती की अभिव्यक्ति है।''[8]

मनुष्य स्वभावतः कल्पना जगत में विचरण करने वाला तर्कशील चैतन्य प्राणी है। उसका सशक्त चिन्तन ऐसी धारणाओं को जन्म देता है, जो सुन्दर हो, उसे आनन्दित करें तथा उसका चहुँमुखी विकास कर उसका कल्याण करें। मनुष्य का कल्याण करने के उद्देश्य से ही भारतीय दर्शन में चतुवर्ग की धारणा का उदय हुआ तथा पाश्चात्य दर्शन में मनुष्य को सुख प्रदान करने पर बल दिया गया। इस सृष्टि का विकास मानव विकास से ही सम्बन्धित है। ''मूल्य वह हैं जिनके पीछे हम चलना चाहे, उपलब्धि के योग्य समझे और जीवन में महत्त्व दे सकें।''[9]

भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य सत्यं, शिवं, सुन्दरं युक्त मानवीय विचार या चिन्तन का निचोड़ ही जीवन मूल्य कहलाता है। जीवन मूल्य ही वह जीवन द्रव्य है जिसमें मानवीय संस्कृति रूपी वृक्ष पल्लवित, पुष्पित और फलित होता हैं जीवन मूल्यों में ही मनुष्य के जीवित रहने की सार्थकता निहित होती है। इन्हीं मूल्यों की उपलब्धि के प्रयत्न में सभ्यता और संस्कृति का जन्म होता हैं। संस्कृति किसी देश जाति अथवा मानव के उन आन्तरिक गुणों का योग है जो उसके आचार–विचार, क्रिया–कलाप एवं जीवन पद्धतियों में अभिव्यक्त होते हैं। संस्कृति एक विरासत के समान है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है और सभ्यता के द्वारा हमारे रहन–सहन, खान–पान एवं वेशभूषा का परिचय मिलता है, जो समाज जितना अधिक सुसंस्कृत होगा उसकी सभ्यता भी उतनी ही अधिक विकसित तथा उन्नत होगी। संस्कृति यदि विषयीगत मूल्यों की परिणति है तो सभ्यता विषयगत मूल्यों का परिणाम।

मूल्य व्यक्ति के उत्थान और पतन के सूचक हैं। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास मूल्यों के विकास से ही सम्बन्धित है। विषयीगत एवं विषयगत जीवन मूल्य ही मनुष्य को सीमिति वस्तु–स्थिति से उठाकर उसके जीवन को ऊर्ध्वगति प्रदान करते हैं इससे मानवता का विकास और संस्कृति समृद्ध होती हैं। जब तक मनुष्य सौन्दर्यात्मक और शिवात्मक अनुभूतियों और विचार धाराओं से मानवीय संस्कृति को विकसित करता रहेगा तब तक मानव जीवन में मूल्यों का महत्व बना रहेगा। मूल्य हमारी संस्कृति के संवाहक तत्व हैं। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को चरित्रार्थ करते हैं। मानव जीवन के कुछ ऐसे लक्षण हैं, जिन्हें समाज मान्यता देता है, जो

व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार को संचालित एवं निर्देशित करते हैं। मानव का आचरण एवं व्यवहार मूल्य नामक धारण में बंधा होता है। आदर्शों को निर्माण इन्हीं धारणाओं की परिणति है। ''मूल्यों के माध्यम से सभी प्रकार की वस्तुओं का मूल्यांकन किया जा सकता है, फिर वह भावना, विचार, क्रिया, गुण, वस्तु, व्यक्ति, समूह, लक्ष्य या साधन कुछ भी हो।''[10]

विश्व की त्रास्त स्थिति मूल्यों में आये परिवर्तन का ही परिणाम है। प्रत्येक क्षेत्र में मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं, जो पुराना है वह छूट रहा है और जो नया है व आधुनिकीकरण की देन है। मानव अपने प्राचीनतम मूल्यों को त्याग जिस पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में दौड़ रहा है वह उसे पतन की आरे खींच रही है। वो मूल्य ही हैं, जो व्यक्ति को समाज में श्रेष्ठ और सम्पन्न बनाते हैं और मूल्य ही हैं जो व्यक्ति को सबकी दृष्टि में गिराकर निम्न स्थान पर पहुँचाते है। यह सब परिस्थितियाँ मनुष्य की मानसिकता स्वरूप बनते–बिगड़ते जीवन मूल्यों का परिणाम हैं। अतः मानव जीवन में मूल्य हर प्रकार से मूल्यवान हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. J.S. Mackenzic, A Manual of Ethics पृ0 219
2. हिन्दी विश्व कोष खण्ड–9 पृ0 365–66
3. रवीन्द्र मुकर्जी भारतीय सामाजिक संस्थाएं पृ0 84
4. बलराम सिंह मानव मूल्य और स्वतन्ज्योत्तर हिन्दी उपन्यास पृ0 14
5. डॉ0 मोहिनी शर्मा हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य पृ0 10
6. वही मोहिनी शर्मा हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य पृ0 11
7. वही मोहिनी शर्मा हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य पृ0 12
8. जोसफ, ए0 लाइगर्नाप, सोशल फिलासफीज इन कनफ्लिवट पृ0 270
9. डॉ0 आनन्द दीक्षित हिन्दी साहित्य में जीवन मूल्य पृ0 16
10. रवीन्द्र मुकर्जी, भारतीय सामाजिक संस्थाए पृ0 84